647510 **BRS2HinF501B** **Seat No :_____**

B.R.S. Semester - 2 (*CBCS*) Examination
March/April– 2019 (New Course)
HINDI (FND-5)

Time: 2:30 Hours **Marks: 70**

Instructions:
1. All questions are compulsory.
2. Figures to the right indicate marks.

प्रश्न १ 'जयद्रूथवध' खण्डकाव्य की कथावस्तु विस्तृत रूप से अपने शब्दो में लिखे। (१५)

अथवा

प्रश्न १ 'जयद्रूथवध' खण्डकाव्य के कवि श्री मैथिलीशरण गुप्तजी का जीवन – परिचय विस्तृत रूप से लिखे।

प्रश्न २ निम्नांकित प्रश्नों के सूचनानुसार उत्तर दीजिए। (१५)

(A) स्वर – व्यंजन का परिचय दीजिए (०५)

(B) निम्नांकित मुहावरों का अर्थ देकर वाक्य में प्रयोग कीजिए। (०५)

(1) गंगा नहाना। (2) आस्तीन का साँप होना।
(3) ठेस लगना। (4) जान हथेली पर रखना।
(5) आँखो में खून उतर आना। (6) कान – का कच्चा होना।
(7) घाट – घाट का पानी पीना। (०५)

(C) निम्नांकित परिच्छेद का गुजराती भाषा में अनुवाद कीजिए।

संसार में मनुष्य जब आता है, तब अपने साथ कुछ नहीं लाया, किंतु जब यह संसार छोडकर जाता है, तब शुभाशुभ कर्म उसके साथ होते है। इन कर्मोँ से ही संसार में मनुष्य का मूल्यांक्न होता है। धन, दौलत, बाग बगीचे सब यहाँ रह जावें, केवल नाम अथवा कीर्ति ही मनुष्य के स्मरण का साधन है। भले लोगों का नाम लेकर उनके सद्गुणों की संसार में प्रशंसा होती है, और बुरे लोगे निंदा के पात्र होते है। इस प्रकार, अच्छा या बूरा नाम ही बाकी बचता है। और वही जीवित रहता है।

प्रश्न ३ निम्नांकित संदर्भो में से किन्हीं तीन संदर्भ की व्याख्या कीजिए। (१५)

(१) साक्षी रहे संसार, करता हुँ प्रतिज्ञा पार्थ में,
पूरा करुँगा कार्य सब कथानानुसार यथार्थ में।
जो एक बालक को कपट से मार हंसते है अभी,
वे शत्रुं सतवार शोक – सागर में मग्न दिखेंगे अभी।

(२) क्या कार्य कर सकता हरे। में आप अपनी शक्ति – से
है सब तुम्हारी ही कृपा, हूँ नाम का ही वीर में॥

(३) गोविंद, हो तुम बडे ही क्रुर, मायावी छली-,
रवि- को छिपाने के प्रथम मुझ को सचेत किया नहीं,
आ जाय मरने की दशा एसी हंसी होती कहीं?
हंसने लगे तब हरि अहा! पूर्जेन्द्रु – सा मुख खिल गया॥

(४) क्षत्राणियों के अर्थ भी सबसे बडा गौख यही,
सज्जित करे पति – पुत्र को रज के लिए जो आप ही।

(५) जो सहचरी का पद मुझे तुमने दया कर छा दिया,
वह था तुम्हारा इसलिए प्राजेश। तुमने ले लिया।
पर-जो तुम्हारी 'अनुचरी' का पुण्य – पद मुझको मिला,
है दूर हरना तो उसे, सकता नहीं – कोई हिला।'

प्रश्न ४ जयद्रूथवध काव्य का नायक अर्जुन का चरित्र – चित्रण कीजिए। (१५)

अथवा

प्रश्न ४ खण्डकाव्य की दृष्टि से जयद्रूथवध काव्य का मूल्यांकन कीजिए।

प्रश्न ५ जयद्रूथवध काव्य के आधार पर अभिमन्यु के चरित्र की विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए। (१०)

अथवा

प्रश्न ५ 'जयद्रूथ – वध' काव्य का संदेश या उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

****